

## श्री हनुमान चालिसा



### दोहा

श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि ।  
बरनउँ रघुबर विमल जसु, जो दायकु फल चारि ॥

बुद्धिहिन तनु जानकै, सुमिरौं पवन कुमार ।  
बल विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस विकार ॥

### चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर ।  
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥

रामदुत अतुलित बल धामा ।  
अंजनी-पुत्र पवनसुत नामा ॥

महावीर विक्रम बजरंगी ।  
कुमति निवार सुमतिके संगी ॥

कंचन वरन विराज सुवेसा ।  
कानन कुण्डल कुचित केसा ॥

हाथ बज्रऔ ध्वजा विराजे ।  
काँधे मुँज जनेउ साजै ॥

शंकर सुवन केसरी नन्दन ।  
तेज प्रताप महा जग वन्दन ॥

विद्यावान गुनी अति चातुर ।  
राम काज करिवे को आतुर ॥

प्रभु चरित्रे सुनिवे को रसीया ।  
राम लखन सीता मन वसीया ॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा ।  
विकट रूप धरि लंक जरावा ॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे ।  
रामचन्द्रके काज सँवारे ॥

लाय सजिवन लखन जियाए ।  
श्री रघुविर हरषि उर लाए ॥

रघुपति कीन्ही बहुत बडाई ।  
तुम मम प्रिय भरत हि सम भाई ॥

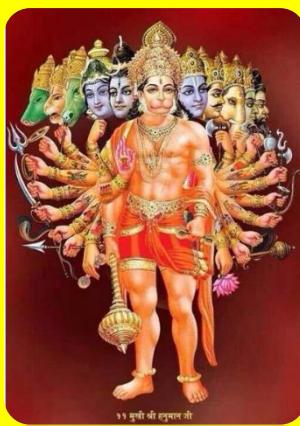
सहस बदन तुम्हरो जस गावै ।  
अस कहि श्रीपति कंठ लगावै ॥

सनकादिक ब्रम्हादि मुनिसा ।  
नारद सारद संहित अहीसा ॥

जम कुवेर दिगपाल जहाँ ते ।  
कवि कोविद कहि सके कहाँ ते ॥

तुम उपकार सुग्रीवहिं किन्हा ।  
राम मिलाय राजपद दिन्हा ॥

तुम्हरो मन्त्र विभिषण माना ।  
लंकेश्वर भए सब जग जाना ॥

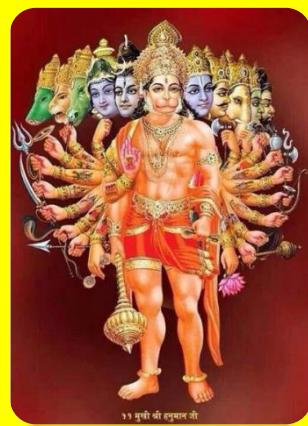


जुग जहस्त्र जोजन पर भानू ।  
लिल्यो ताहि मधुर फल जानू ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।  
जलधि लाँधी गए अचरज नाहीं ॥

दुर्गम काज जगत के जेते ।  
स्गम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥

राम दुआरे तुम रखवारे ।  
होत न आज्ञा विनु पैसारे ॥



सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।  
तुम रक्षक काहुको डर ना ॥

आपन तेज सम्हारो आपै ।  
तिनो लोक हाँक ते कापै ॥

भुत पिसाच निकट नहि आवै ।  
महाविर जब नाम सुनावै ॥

नासै रोग हैर सब पीडा ।  
जपत निरन्तर हनुमत बीरा ॥

संकट ते हनुमान छुडावै ।  
मन क्रम वचन ध्यान जो लावै ॥

सब पर राम तपस्वी राजा ।  
तिनके काज सकल तुम सजा ॥

और मनोरथ जो कोइ लावै ।  
सोइ अमित जीवन फल पावै ॥

चारो जुग प्रताप तुम्हारा ।  
है प्रसिद्ध जगत उजियारा ॥

साधु संतके तुम रखवारे ।  
असुर निकन्दन राम दुलारे ॥

अष्ट सिद्धि नौ निधिके दाता ।  
अस वर दीन जानकी माता ॥

राम रसायन तुम्हरे पासा ।  
सदा रहो रघुपतिके दासा ॥

तुम्हरे भजन रामको पावै ।  
जन्म जन्मके दुःख विसरावै ॥

अन्तकाल रघुवर पुर जाई ।  
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥

और देवता चित्त न धरई ।  
हनुमत सेइ सर्व सुख करई ॥

संकट कटै मिटै सब पिडा ।  
जो सुमिरै हनुमत बलवीरा ॥

जय जय जय हनुमान गोसाई ।  
कृपा करहु गुरु देवकी नाई ॥

जो सत वार पाठ कर कोइ ।  
छुटहि बन्दी महा सुख होई ॥

जो यह पदै हनुमान चालिसा ।  
होय सिद्धि साखी गैरिसा ॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा ।  
किजै नाथ हृदय मह डेरा ॥

### दोहा

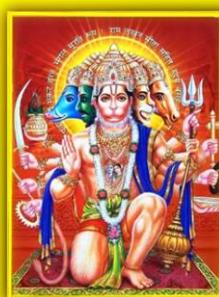
पवन तनय संकट हरन, मंगल मूर्ति रूप ।  
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

### मन्त्र

ॐ नमः हनुमते भए भंजनाए सुखम् कुरु फट स्वाहा !

### प्रार्थना

कवन सो काज कठिन जग माहि, जो नहि होइ तात तुम्ह पाही !



सीयावर रामचन्द्रकी जय !



पवनसुत हनुमानकी जय !!